

पालतू पशुओं में किलनी ज्वर/ चिंचडी बुखार(बबेसिओसिस) –कारण एवम् निवारण

डॉ. देवेन्द्र प्रसाद पटीर, डॉ. श्याम लाल गर्ग, डॉ. हितेश्वर सिंह यादव एवं
डॉ. अविनाश कुमार चौहान

परजीवी विज्ञान विभाग, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, बरेली

राष्ट्र के आर्थिक विकास में कृषि एवम् पशुपालन का अहम योगदान है। उत्तम पशु उत्पादन पशु के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। विभिन्न संक्रामक बिमारियों में से बबेसिओसिस भी एक घातक अन्तः परजीवी रोग है, जिसका प्रसार किलनी/ चिंचड से होता है। यह रोग मवेशियों, भेड़- बकरियों, घोड़ों, सुअरों तथा कुतों में पाया जाता है परन्तु सर्वाधिक आर्थिक नुकसान दुधारू मवेशियों में करता है। देशी नस्ल व बछड़ों में रोग प्रतिरोधक क्षमता के कारण बबेसिओसिस का संक्रमण कम होता है, जबकि विदेशी व संकर नस्ल संक्रमण के लिए अत्यधिक संवेदनशील होती है।

कारण

मानव में मलेरिया कि भाँति पशुओं में बबेसिओसिस नामक रोग पाया जाता है जो कि एककोशिकीय रक्त प्रोटोज़ोअन, बबेसिआ की विभिन्न प्रजातियों के संक्रमण से फैलता है। ये परजीवी अत्यंत सूक्ष्म व नाशपाती के आकार के होते हैं तथा बीमार जानवर के लाल रुधिर कणिकाओं के अंदर पाये जाते हैं। इस रोग का प्रसार रिफिसिफेलिस प्रजाति के किलनी/ चिंचड के रक्त चूसने से होता है। अगर पशु बबेसिआ संक्रमित है तो किलनी खून चूसते समय संक्रमण ग्रहण कर लेती है तथा लैंगिक जनन के द्वारा परजीवियों की संख्या बढ़ती है। मादा किलनी/चिंचड अपने अंडे के द्वारा संक्रमण को अपनी संतति में भी स्थानांतरण कर देती है। ये संक्रमित किलनी/ चिंचड जब स्वस्थ पशु का खून चुस्ती है तो संक्रमण पशु के रक्त में छोड़ देती है। पशु की लाल रुधिर कणिकाओं में अलैंगिक जनन के द्वारा बबेसिआ की संख्या बढ़ जाती है तब रोग के लक्षण दिखाई देने लगते हैं व पशु बीमार पड़ जाता है।

रोग के प्रमुख लक्षण

परजीवी के रक्त में पहुँचने के बाद लगभग दस दिन में बीमारी के निम्न लक्षण पशु में दिखाई देने लगते हैं-

- अचानक तेज बुखार
- श्वसन दर व हृदय धड़कन में वृद्धि
- भूख में कमी, जुगाली बन्द व दूध में निरन्तर गिरावट
- रोग की शुरुवात में कब्ज फिर दस्त

- लाल रुधिर कणिकाओं के टूटने से हिमोग्लोबिन पेशाब के साथ निकलता है , जिसके कारण पेशाब का रंग कोफ़ी जैसा दिखता है अतः इस रोग को लहुमूतिया (रेड वॉटर) बीमारी भी कहा जाता है।
- रोग के शुरुआत में आँख की पुलती सुर्ख लाल फिर सफेद
- रक्ताल्पता की वजह से पीलिया
- ग्याभन पशु में गर्भपात
- अस्थायी बुखार की वजह से नर बैलों में बन्ध्यता
- रोग की अंतिम अवस्था में पिछले पैरों में लकवा मार जाने के कारण पशु निढाल होकर गिर जाता है, दौरे पड़ने लगते हैं तथा कोमा के बाद मृत्यु हो जाती है।
- घोड़ों में मुख्यतः पीलिया पाया जाता है इसलिए इसे बिलीयरी फीवर भी कहते हैं।
- कुत्तों में लाल रुधिर कणिकाए तेजी से खत्म होती हैं जिसकी वजह से दिमागी दौरे पड़ना जैसी समस्या हो सकती हैं।

निदान

- बीमारी के लक्षणों द्वारा
- किलनियो की प्रचुर उपलब्धता
- रोग के प्रकोप का इतिहास जानकर
- सुनिश्चित निदान के लिए काँच की पट्टिका पर रक्त को अभिरन्जित करके सूक्ष्मदर्शी में बबेसिया को आकार से पहचान कर
- जैव प्रौद्योगिकी तक नीक जैसे एलिसा व पीसीआर परीक्षण द्वारा बहुत सूक्ष्म व विभिन्न प्रजाति के संक्रमण को विभेद व वर्णित कर सकते हैं।

उपचार

सही देखभाल व उचित समय पर उपचार ना मिलने से पशु की मौत भी हो सकती है , कारगर उपचार हेतु निम्नलिखित दवा बाजार में उपलब्ध है,

- डाईमिनेजिन एसिट्रेट(बेरेनिल)
- इमिडोकार्ब
- टेट्रासाईक्लीन
- सहायक उपचार के लिए फ्लूड थेरेपी , एंटीइंफ्लैमेट्री, व कॉर्टिकोस्ट्रॉइड भी दिया जाना चाहिए।
- अत्यधिक रक्ताल्पता की परिस्थिति में रक्ताधान से पशु की जान बचाई जा सकती हैं।

नोट- दवा के दुष्प्रभाव से बचने के लिए उपरोक्त उपचार पशु चिकित्सक की देखरेख में ही लेना चाहिए ।

रोकथाम एवम् नियन्त्रण

- पशु को लक्षण प्रकट होते ही रक्त की जाँच करवानी आवश्यक हैं।

- अत्यधिक चिंचड प्रभावित क्षेत्रों में हर 4-6 हफ्तों से चिंचडनाशक का छिड़काव करना चाहिए।
- समय - समय पर चिंचडरोधी टीकाकरण से बीमारी के प्रकोप से बचा जा सकता है।
- जैविक नियन्त्रण के लिए बतख, मुर्गी, बटेर आदि पक्षी चिंचड को खाकर के नष्ट कर सकते हैं।
- पशुओं के आस-पास का वातावरण साफ व सूखा रखना चाहिए।
- नये पशु को लाने से पहले जाँच कर लेनी चाहिए की वो बबेसिया अथवा चिंचड से संक्रमित तो नहीं हैं।
- रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से पृथक रखना चाहिए।
- बबेसिया संक्रमण से उबरने के बाद पशुओं में चार साल तक रोग प्रतिरोधक क्षमता बनी रहती है।